P&G संचार और सूचना

सूचना

संवाद करने वाले पहले लोग बिना कपड़ों के आदिम मनुष्य थे। सूचना देने वाले पहले लोग कपड़ों और प्रेस-कार्ड वाले आदिम मनुष्य थे।

फिर भी आदिम मनुष्य। कुछ नहीं बदला। सिवाय इसके कि पहले वालों को जीवन से जूझना पड़ता था, जबकि दूसरे उन बचे हुओं को वापस जीवन में लाने से अपनी जीविका चलाते हैं।

पर तर्क या आलोचना के लिए समय नहीं — वे गतिविधियां मैंने कभी नहीं कीं।

मैं जो करना चाहता हूं वह है कहानियों के ज़रिए दोनों के बीच का मानवशास्त्रीय फ़र्क़ बताना।

संवाद का पहला सच्चा रूप — और यहाँ सब अपनी सीट से उछल पड़ेंगे — मौन है।

शब्द से पहले, आवाज़ से पहले, इशारे से पहले, मुद्रा से पहले, मौन के अभ्यास ने हमेशा किसी व्यक्ति की बुद्धिमत्ता को उसकी प्रक्रिया और निर्णय लेने की क्षमता से नापा है — कभी उल्टा नहीं।

और पुरुष, एक साथ जुटकर, चुप रहते, तारों को देखते, अमूर्त को, कल्पित को — जब तक, दूर से, स्त्रियों का एक समूह, खुद को अकेला मानते हुए, आपस में बात करने लगता: धीमी आवाज़ें, नियंत्रित लहज़ा, नियंत्रित लय, एक व्यवस्थित प्रवाह, हर शब्द सावधानी से रखा हुआ। यही स्त्रियां हैं।

पर मौन ने मानवता को जो पहला सबक दिया, वह किसी आंतरिक संयम जैसा नहीं — वह एक विधि है, हर उस स्थान के भीतर अंतिम सीमा जहाँ असली निर्णय लिए जाते हैं।

फिर भी, मौन के भीतर का शोर वह है जो कभी गायब नहीं होता: वह भीतर से आता है, और वह भावनात्मक, संज्ञानात्मक, तार्किक और युक्तिसंगत, सहज और स्नेहिल — सब एक साथ है।

और यहाँ, इसे सचमुच संभालने में सक्षम, हमेशा की तरह, स्त्रियां ही रहती हैं — इतनी संपूर्ण, इतनी क्रियाशील, कि उन्हें मानव-प्रजनन को आगे ले जाने का काम भी सौंपा गया। (अन्य क्षेत्रों में — जैविक, कोशिकीय — नर भी जन्म देते हैं। पर वह एक अलग तरह का संचार है।)

बाक़ी जो कुछ मैंने यहाँ नहीं छुआ, उसे मैं हर व्यक्ति के अपने अनुभव पर छोड़ता हूं — यही हमारे होने का सबसे अच्छा हिस्सा है।

सूचना मुझे बचपन के एक खेल की याद दिलाती है: सब एक घेरे में, पहला व्यक्ति अगले के कान में एक शब्द फुसफुसाता है, और यह बारह लोगों की कतार से गुजरता है। दूसरे छोर पर जो निकलता था वह अक्सर हंसी का तूफ़ान होता था।

खेल एक ही शब्द या पूरे वाक्य पर चल सकता था, और यही होता:

WILL LIVE (वह जीएगा) से शुरू करें, और बारह बार गुज़रने के बाद जो शब्द दूसरे छोर पर निकला वह था WILL DIE (वह मरेगा)।

WE ALL KNEW HE WOULD LIVE (हम सब जानते थे वह जीएगा) जैसे वाक्य से शुरू करें, और बारह बार गुज़रने के बाद यह लौटा: EVERYONE KNEW HE WAS DEAD, FUNERAL SET FOR THE 12TH AT 12:00 (सबको पता था वह मर चुका है, अंतिम संस्कार 12 तारीख़ को 12 बजे तय)। हा हा हा हा।

आज मैं ठीक इसी तरह मीडिया को सूचना चलाते देखता हूं — किसी ख़बर की शुरुआती पंक्ति एक आउटलेट से दूसरे आउटलेट तक अलग-अलग ढंग से रिपोर्ट होती है। जिसे हमने बचपन का खेल समझा, वह असल में एक सूचना-उद्योग का कड़वा सच है, जहाँ अख़बार के स्टॉल और न्यूज़रूम में अब कोई फ़र्क़ नहीं बचा।

अंततः, दोनों चीज़ें एक ही धागे से बंधी हैं — वे एक ही आदिम मूल की संतानें हैं। बस यह देखना काफ़ी है कि लोग कैसे कपड़े पहनते हैं।

शुभ पठन।

फ़र्दिनान्दो

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com